विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

बिहार शिक्षा परियोजना
BIHAR EDUCATION PROJECT

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

राज्य परियोजना निदेशक की कलम से

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र आवासीय ने समाज के अभिवंचित और विद्यालय से बाहर के बच्चों के शैक्षणिक और सामाजिक पुननिर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बिहार में 2007 से अब तक विद्यालय से बाहर 380226 बच्चों को करीब 7500 केन्द्रों के माध्यम से शिक्षा की मुख्यधारा में न केवल जोड़ा गया, बल्कि उन्हें नये जीवन की राह दिखा कर नये लक्ष्य की ओर अग्रसर किया गया।

2007 के पहले बिहार ऐसा राज्य था जहाँ विद्यालय से बाहर के बच्चों की संख्या 30 लाख के करीब थी। बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् द्वारा चलाए गये संकल्प अभियान में बच्चों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास के लक्ष्य के साथ जिस तरह विशेष प्रशिक्षण केन्द्र आवासीय का संचालन प्रारंभ किया गया, वह सिद्धांत आज भी अपने थोड़े बहुत परिवर्तनों के साथ संचालित है। इन केन्द्रों के बच्चे न केवल शैक्षणिक गतिविधियों में आगे बढ़े, बल्कि कला, सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभिन्न खेलों में भी अपने हुनर का परचम लहराया।

ये केन्द्र न केवल शैक्षणिक सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र है बल्कि सामाजिक परिवर्तन लाने में भी इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

(संजय सिंह)
राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् सैदपुर, पटना

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) से अच्छादित करने के लिए बच्चों की पहचान वार्षिक कार्य योजना एवं बजट के समय की जाती है।

- बच्चों की पहचान गहन सर्वे/बालपंजी के माध्यम से की जाती है।

सर्वे में विद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त जिला स्तर के सभी पदाधिकारी एवं कर्मी भी सम्मलित होते हैं।

- बच्चों की पहचान, बच्चों का विद्यालय में नामांकन एवं विद्यालय से बाहर के बच्चों के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था हेतु तैयारी प्रारंभ कर दी जाती है।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

विद्यालय से बाहर के बच्चे निम्नलिखित कोटि के होते हैं–

- खेतों में काम करनेवाले बच्चे
- गाय, भैंस, भेड़, बकरी सुअर चरानेवाले बच्चे
- घरेलू कार्य करनेवाले बच्चे
- माता–पिता के काम पर चले जानेपर अपने से छोटे भाई–बहन की देखभाल करनेवाले बच्चे
- प्रथम पीढी के बच्चे
- घुमन्तु परिवार के बच्चे
- अनाथ बच्चे
- विशेष आवश्यकतावाले बच्चे
- ईंट भट्ठों / स्टोन क्रसरों पर काम करनेवाले बच्चे

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

शहरी क्षेत्रों में विद्यालय से बाहर के बच्चें निम्नलिखित कोटि के होते हैं–

- •कुड़ा चुननेवाले बच्चे
- भीख मांगनेवाले बच्चे
- अनाथ बच्चे
- घरों में, होटलों में, ईंट भट्ठों पर काम करनेवाले बच्चे
- गलियों में यत्र–तत्र घूमनेवाले बच्चे
- देह व्यापार में लगे परिवार के बच्चे
- चाय पकौड़ी की दुकान, टायर का पंक्चर बनानेवाले दुकान पर काम करते बच्चे
- रेलवे प्लेटफार्म पर भटकनेवाले बच्चे

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

तीन दिवसीय कैम्प

- विद्यालय से बाहर के बच्चों को प्रखंड स्तर पर एकत्र कर इन्हें शिक्षा के प्रति आकर्षित करना।
- इन बच्चों द्वारा रैली निकलवाना।
- बच्चों से तरह–तरह की गतिविधियाँ कराना।
- बच्चों को आवासीय प्रशिक्षण हेतु तैयार करना।
- बच्चों के दक्षता की जाँच करना (बेस लाईन टेस्ट)

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

तीन दिवसीय कैम्प

गतिविधि :

खेल कूद

मिट्टी से सामग्री निर्माण

गीत – संगीत

रैली

चित्रकला

कहानी सुनाना

समूह कार्य

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

तीन दिवसीय कैम्प से संबंधित गतिविधि :

खेल कूद,

अखबार के कतरनों से गतिविधि

गीत – संगीत

रैली, चित्रकला

कहानी सुनाना

समूह कार्य।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

शिक्षा स्वयंसेवकों का चयन एवं प्रशिक्षण :

- शिक्षा स्वंय सेवकों/सेविकाओं का चयन, उनकी योग्यता और प्राप्त अंकों के आधार पर वरीयता के अनुसार होता है।
- चयन के उपरान्त शिक्षा स्वयंसेवकों/सेविकाओं को कुल 20 दिनों का प्रशिक्षण क्रमवार/फेजवाइज दिया जाता है।
- प्रशिक्षण के उपरान्त केन्द्र प्रारंभ ।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

केन्द्र संचालन :

- केन्द्र का प्रारंभ एक उत्सव के रुप में किया जाता है

यह उत्सव कम से कम 15 दिनों तक चलता रहता है

ताकि बच्चे इस नये माहौल में ढल जाएँ।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

केन्द्र का संचालन गतिविधियों के साथ प्रारंभ किया जाता है।

- जानवरों की आकृतियों की पहचान, खेल–कूद, संगीत एवं नृत्य आदि के माध्यम से बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का कार्य किया जाता है।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

केन्द्र का संचालन :

- नित्यक्रिया के बाद बच्चों के व्यायाम एवं चेतना सत्र से प्रातः कालीन सत्र का प्रारंभ।
- समूह में बांटकर भाषा और गणित की जानकारी दी जाती है।
- समूह में एकसाथ भोजन
- खाने के बाद आराम
- दूसरे सत्र में पुनः भाषा और गणित
- शाम में खेल–कूद एवं बाल संसद

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

केन्द्र में आवश्यकतानुसार बच्चों के विभिन्न कौशलों का विकास

- अन्य संस्थाओं के सहयोग से बालिकाओं के लिए सेनेटरी नेपकिन का प्रशिक्षण
- जूडो–कराटे का प्रशिक्षण

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

- संगीत का प्रशिक्षण
- भ्रमण कार्यक्रम
- मुख्यमंत्री के साथ संवाद
- राज्य स्तरीय मेलों एवं खेलों में हिस्सेदारी

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

- भ्रमण कार्यक्रम।
- बच्चों की कार्यशाला।
- अन्य बच्चों को शिक्षा की ओर प्रेरित करना।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

केन्द्र पर दी जा रही सुविधा :

- सभी केन्द्र पर भोजन एवं आवासीय सुविधा की उपलब्धता
- सभी बच्चों के लिए परिधान की व्यवस्था
- सभी बच्चों के लिए विशेष प्रशिक्षण से संबंधित पुस्तकों की व्यवस्था
- बच्चों के लिए पुस्तकालय, अखबार एवं खेलकूद सामग्री की उपलब्धता
- समय–समय पर स्वास्थ्य जाँच

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

केन्द्र के संचालन समितियां एवं अभिभवाकों की बैठक :

- जिला स्तरीय प्रबंधन–सह–अनुश्रवण समिति
- प्रबंधन समिति
- केन्द्र संचालन समिति
- अभिभावक बैठक

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

केन्द्र में ग्रामपंचायत एवं समुदाय का सहयोग

- जूता एवं मोजा स्थानीय समुदाय के सहयोग से।
- स्वेटर स्थानीय समुदाय के सहयोग से।
- सोलर लाईट ग्राम पंचायत के सहयोग से।
- स्कूल–ड्रेस स्थानीय सहयोग से।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

केन्द्र में मनाये जानेवाले पर्व त्योहार

- केन्द्र में पर्व–त्योहार एवं महापुरूषों की जयन्तियाँ पूरे उल्लास के साथ मनायी जाती है।
- सभी त्योहारों में तरह–तरह के कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

केन्द्र में मनाये जानेवाले उत्सव

- महापुरुषों की जयन्ती।
- बच्चों का जन्मदिवस।
- योग कार्यक्रम

केन्द्र में बच्चों का मूल्यांकन

- केन्द्र में समूहवार बच्चों का मूल्यांकन किया जाता है।
- मूल्यांकन लिखित एवं मौखिक होता है।
- इसके अलावे खेल–कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम बाल संसद में बच्चों की भागेदारी, साफ–सफाई भी मूल्यांकन के आधार होते हैं।

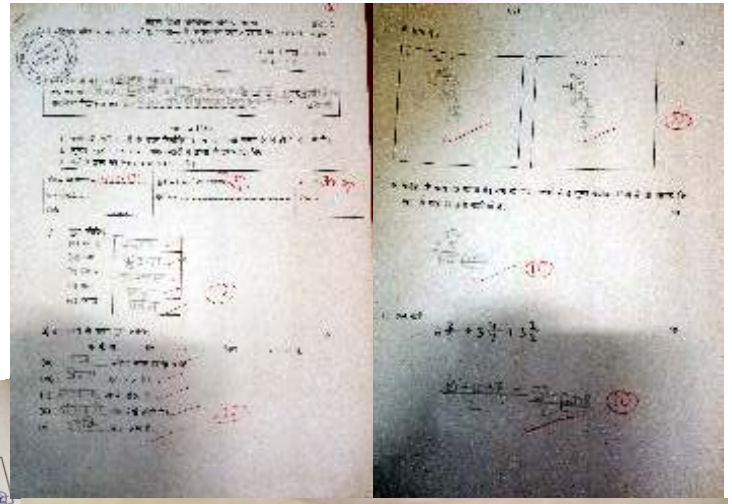

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय):एक यात्रा

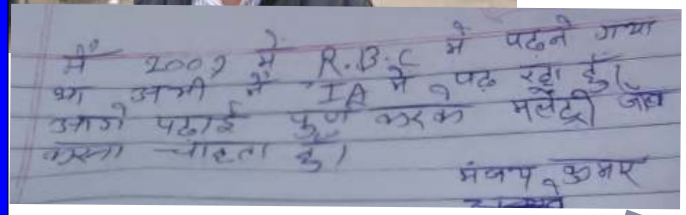

मुख्यधारा में शामिल होने के उपरान्त ट्रैकिंग :

- केन्द्र के बच्चों का नामांकन के उपरान्त ट्रैकिंग
- उनके शैक्षणिक समस्याओं के सामाधान का प्रयास
- विद्यालय एवं समुदाय द्वारा उन बच्चों पर विशेष ध्यान
- प्रखंड में चल रहे विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों पर इन बच्चों को बुलाकर उनका उत्साहवर्द्धन करना।

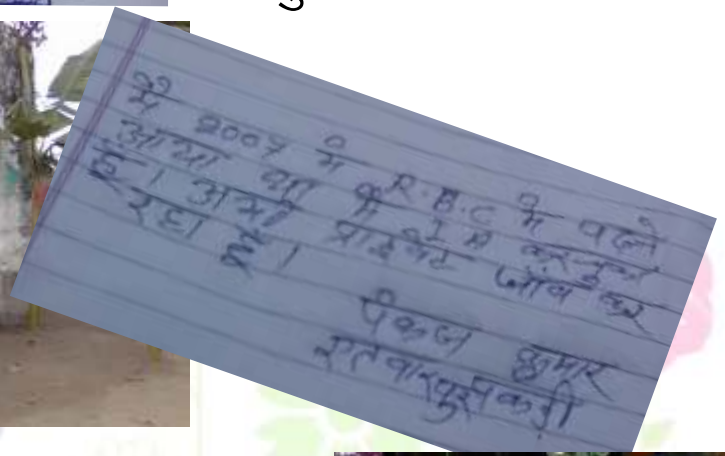

सफलता की कहानी

आमोद पासवान : मैं बचपन में अपने माता–पिता के साथ या तो भीख मांगता था या गाँव में बकरी चराता था। मुझे कभी भी भीख मांगना अच्छा नहीं लगता था। बकरी भी मैं मजबूरी में ही चराता था। जब मेरी पहली मुलाकात शिवराम सर से हुई तो मैने उनसे कहा कि मुझे पढ़ना अच्छा लगता है पर कोई मुझे स्कूल भेजता ही नहीं। यह पूछे जाने पर कि स्कूल जाने पर उसकी बकरी कौन चरायेगा, मैं कुछ सोच में पड़ गया था। अगले दिन जब शिवराम सर से मेरी मुलाकात हुई तो मैने कहा कि मैं पढ़ने के लिए तैयार हूँ, मैने अपनी बकरी बेच दी है और अब मुझे बकरी चराने के लिए कोई नहीं कह सकता है।

वैशाली जिले के लालगंज प्रखंड के आवासीय विशेष प्रशिक्षण केन्द्र में पढ़ रहे आमोद की सफलता की कहानी ने आमोद को मुख्य–मंत्री से मिलने का मौका दिया। आज आमोद 12वीं की परीक्षा पास कर चुका है। एक शिक्षक बनकर समाज में व्याप्त अशिक्षा को दूर करना चाहता है।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

अजीत कुमार : बचपन में ताड़ के पेड़ पर चढ़ना, ताड़ी उतारना एवं उसे पीना मुझे बहुत अच्छा लगता था। स्कूल मेरे लिए जेल के समान था। पढ़ना मुझे अच्छा नहीं लगता था। मेरे पिता श्री प्रसाद पासवान चाहते थे कि मैं स्कूल जाऊँ और पढ–लिख कर कुछ काम करुँ पर मेरे लिए यह किसी बुरे सपने की तरह था। कुछ समय पहले मैने देखा कि कुछ लोग हमारे गाँव के बच्चों के साथ कभी गाना गा रहे हैं तो कभी खेल रहे हैं। मेरा मन भी खेलने को कर रहा था पर अनजान लोगों के साथ बात करने में कुछ अटपटा लग रहा था। कई दिनों तक मैं देखता और ललचाता रहा। आखिर मुझसे रहा नहीं गया। मैं भी खेलना चाहता था शिवपूजन सर जो लगातार मुझे देख रहे थे उन्होंने मुझसे कहा कि क्या तुम खेलोगे? मैं तो बस तैयार ही था। कुछ दिनों तक यही चलता रहा। धीरे–धीरे मेरी पढ़ाई कब शुरु हो गई मुझे पता ही नहीं चला। अब मैं विशेष प्रशिक्षण केन्द्र भटौली भगवान का छात्र था। खेल के साथ–साथ मेरी शिक्षा भी तेजी से आगे बढ़ रही थी। आज मैं इन्जीनियरिंग का छात्र हूँ।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

अरमान आसिफ : बचपन से पोलियोग्रस्त होने के कारण मैं लंगड़ाकर चलता था। स्कूल में सभी बच्चे मुझे लंगड़ा कह कर चिढ़ाते थे, इस कारण मैने स्कूल जाना छोड़ दिया था। मेरे पिता मो॰ शमीम शेखौना खेतिहर मजदूर थे पर चाहते थे कि मैं पढ़ूं। गाँव में बच्चों के सर्वे के क्रम में जब उमेश सर मेरे घर आए तो मैने पढ़ने की इच्छा जाहिर की। उमेश सर बहुत खुश हुए। मैं जल्द ही विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) का छात्र बन गया।

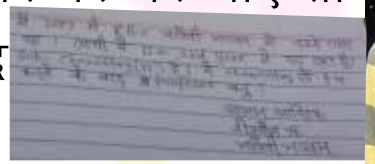

केन्द्र में होनेवाली सभी गतिविधियों में मैं हिस्सा लेता था पर जब पहली बार बाल रैली निकाली गई तो मुझे केन्द्र में ही रहने के लिए कहा गया। मैने कहा भले ही मैं धीरे चलूंगा मैं हर हाल में जाऊँगा। यह सुनकर सभी ने मेरा हौसला बढ़ाया। अब मुझे पोलियोग्रस्त होने का कोई अफसोस नहीं था।

आज मैं रसायन विज्ञान से स्नातक कर रहा हूँ तथा आगे चलकर कॉलेज में बच्चों को पढ़ना चाहता हूँ।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

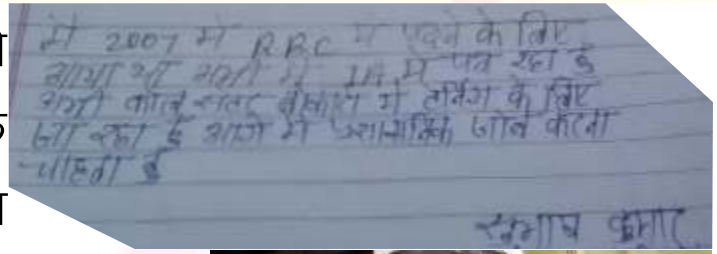

सुभाष कुमार : तालाब के किनारे मछली मारते हुए सुभाष की मुलाकात जगन्नाथ जी से हुई। बातों ही बातों में पता चला कि मछली मारना एवं खेतों में मटरगश्ती करना सुभाष को बहुत पसंद था। स्कूल जाने के लिए कहने पर सुभाष को खोजना असंभव था। सुभाष को प्रेरित कर विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) में लाना एक चुनौती थी। कुछ ही दिनों में जगन्नाथ जी को पता चल गया कि सुभाष को गाना गाना बहुत पसंद है। जगन्नाथ जी ने सुभाष को केन्द्र में आकर गाना गाने के लिए आग्रह किया। एक घंटा के लिए 100 रुपये देना शुरु किया। सुभाष तैयार हो गया और केन्द्र में आकर गाना गाने लगा। कुछ दिनों में ही वह केन्द्र के बच्चों के साथ काफी घुल–मिल गया। उसने केन्द्र में ही रहने के लिए अपने पिता सुरेश पासवान से बात की। सुरेश पासवान जिन्हें जगन्नाथ जी ने पहले से ही प्रेरित कर रखा था, तुरंत तैयार हो गये। सुभाष अब गाने के साथ पढ़ने भी लगा। केन्द्र से निकलने के बाद सुभाष आज इन्टर कर रहा है। गाने के क्षेत्र में सुभाष ने बिहार में अपनी खास पहचान बनायी। सीमित संसाधनों के बाद भी अथक प्रयास से अपने गाने का एलबम तैयार किया। आज वह गायन के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए बेताब है।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

विशाल कुमार : गाँव में तरबूजे के खेत में तरबूजा तोड़ने और बेचने में ही विशाल का बचपन बीत रहा था। किसी ने भी उसे न तो विद्यालय जाने के लिए कहा था और न ही उसे विद्यालय जाने की इच्छा थी। तरबूज का मौसम खत्म हो तो केले का मौसम फिर आम का मौसम यानि कुछ–न–कुछ फल को बेचकर घर के जीवन यापन में अपने माता–पिता की मदद करना ही उसकी दिनचर्या थी। आम के बगीचे में जब उसने बच्चों के साथ जगन्नाथ जी को खेलते एवं गाते देख उसे भी उनके साथ खेलने का मन करने लगा। अन्य बच्चों के साथ विशाल भी इस टोली में शामिल हो गया। दौड़ने एवं कूदने में विशाल अपने अन्य साथियों से काफी आगे था। विशेष प्रशिक्षण केन्द्र में जाने के लिए काम छोड़कर पिता को मनाना काफी मुश्किल था। ग्रामपंचायत के सदस्यों एवं समुदाय के दबाव एवं जगन्नाथ जी की प्रेरणा से जंगली पासवान विशाल को केन्द्र में भेजने के लिए तैयार हो गये। केन्द्र में आकर विशाल को एक नई दुनिया मिली। आज विशाल न केवल स्नातक कर रहा है बल्कि पढ़ते–पढ़ते ही उसका चयन सेना में हो गया है।

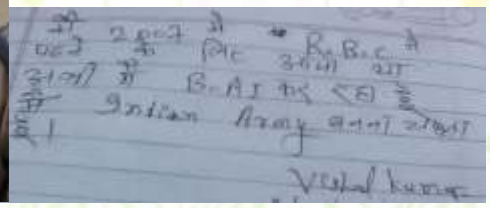

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) : एक यात्रा

बेबी कुमारी : पिता श्री सुखारी पासवान एवं माता श्रीमती कांती देवी की दूसरी पुत्री बेबी कुमारी उम्र 14 वर्ष ग्राम एतवारपुर सिसौला (पकड़ी), पोस्ट माणिकपुर पकड़ी, प्रखंड – लालगंज जिला वैशाली, बिहार की निवासी है। माता एवं पिता दोनों खेतीहर मजदूर हैं। इस परिवार के सभी बच्चे बाल–श्रमिक थे। खेतों में धान एवं गेंहू के बीज बोना, काटना एवं निकौनी करना, खीरा एवं खरबूजा तोड़ना ही बेबी कुमारी का मुख्य काम था। इसके अतिरिक्त उसे घरेलू कार्य करना एवं खाना बनाना पड़ता था। बेबी का मानना था कि लड़की को तो काम करना ही पड़ता है। खेतों में काम करते समय बेबी कुमारी को हमेशा अपशब्दों का सामना करना पड़ता था। बेबी के भाई विजय ने जो विशेष प्रशिक्षण आवासीय का छात्र था ने बेबी को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। उसकी माँ को कई प्रकार की शंकायें थी। जैसे इतनी उम्र में कैसे पढ़ेगी, अगर पढ़ेगी तो घर कैसे चलेगा, शादी कब होगी, स्कूल तो बहुत दूर है, लोग क्या कहेंगे? लोगो ने उनकी माँ को कई प्रकार से समझाया, पढ़ाई के महत्व के बारे में बताया, बच्चों के अधिकार के बारे में बताया, खुद विजय का उदाहरण सामने रखा। इस प्रकार उसकी माँ के समझ में आने लगा कि पढ़ाई से ही घर की गरीबी को दूर किया जा सकता है और वह बेबी कुमारी को केन्द्र में पढ़ाने के लिए तैयार हो गई। केन्द्र में जाने के बाद आश्चर्यजनक रूप से घर के सभी सदस्य यहाँ तक कि उसके माता–पिता भी पढ़ना–लिखना सीख रहे हैं। पिता ने ताड़ी पीना बन्द कर दिया। घर में जहाँ हमेशा झगड़ा होते रहता था वहीं अब घर का वातावरण बदल गया है। खाना माँ बनाने लगी है। माता पिता भी अपने बच्चों के लिए दुगनी मेहनत कर रहें हैं। घर के सभी सदस्य शाम में एक साथ रहते एवं पढ़ते हैं। ऐसा पहले कभी भी नहीं था। आज बेबी स्नातक की परीक्षा पास कर चुकी है और शिक्षक बनने की तैयारी कर रही है।